Online at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN No. 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023: 2(1): 123-125

सोशल मीडिया का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव

हेमलता चौधरी

शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * हेमलता चौधरी

सारांश

इस शोध अध्ययन के अन्तर्गत सोशल मीडिया का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव को जानने हेतु किया गया है। शोध अध्ययन में जयपुर शहर के अकादमिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200-200 ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिसमें से 100-100 छात्र एवं छात्राऐं थे। प्रभावशीलता मापन शोधार्थी द्वारा निर्मित 'सामाजिक मूल्य मापनी' द्वारा किया गया। शोध उद्देश्यों के लिए हमने माध्य व मानक विचलन का प्रयोग किया व शोध परिकल्पनाओं के लिए टी अनुपात का प्रयोग किया गया तथा 0.01 एवं 0.05 स्तर की सार्थकता पर उनका अनुमानिक विश्लेषण किया गया। शोध अध्ययन के परिणामों में पाया कि सोशल मीडिया के प्रभाव में ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में सार्थक अंतर है जबकि शहरी छात्र व छात्राओं के मध्य भी सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

Publication Information

Received Date: 06-01-2023
Accepted Date: 24-01-2023
Publication Date: 30-01-2023

How to cite this article:

चौधरी हे, सोशल मीडिया का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव. Int J Contemp Res Multidiscip. 2023;2(1):123-125.

मुख्य शब्द: मुख्य शब्दावली - सोशल मीडिया, सामाजिक मूल्य, महाविद्यालय, प्रभावशीलता

परिचय

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विद्यार्थियों की शिक्षा को बढ़ाने में बडी संभावनाऐं और फायदे प्रदान करता है। पहला, यह कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी इंटरैक्टिव लर्निंग अनुभवों के प्रावधानों के माध्यम से सीखने के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। दूसरा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से सीखना अधिक प्रभावी है क्योंकि वे कई तकनीकों के अवसर प्रदान करते है। जो अंतर्राष्ट्रीयकरण और कठिन अवधारणाओं और प्रक्रियाओं की समझ में विजुअलाइजेशन साधन प्रदान करते है। यह सिद्धांत और अभ्यास के बीच संबंध स्थापित करने के अवसर प्रदान करता है। तीसरा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी छात्रों के लिए मूल्यवान कम्प्यूटर कौशल हासिल करने के अवसर प्रदान करता है जो आज के नौकरी बाजार में उपयुक्त है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संसाधनों के प्रदर्शन के साथ विद्यार्थियों में शिक्षण को भी बढ़ाता है। विद्यार्थियों के पास वर्तमान और अप-टू-मिनट की जानकारी तक पहुंच है। शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग स्मृति प्रतिधारणा में सुधार, प्रेरणा में वृद्धि और आमतौर पर समझ को गहन कर सकता है। टेक्नोलॉजी एडेड लर्निंग छात्रों को उच्च स्तर की सोच की ओर ले जाता है और तकनीकों के विकास के साथ उन्हें स्वयं शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनाता है। कंप्यूटर, वेब कॉन्फ्रेंसिंग, इंटरनेट, ब्रॉडबैंड और विभिन्न एप्स जैसे गूगल क्लास रूम, गूगल मीट, जूम क्लास, स्मार्ट फोन उच्च अधिगम के पोषण को आकार देता है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ परंतु विद्यार्थियों की सोच हमारी सोच से और अधिक परे चली गई। केवल अपने आप को ऑनलाइन कर ना जाने क्या कर रहे है कोई नहीं जानता है? कुछ विद्यार्थियों में इस नयी तकनीकी शिक्षा के प्रति अनभिज्ञता है, कुछ के पास स्मार्ट फोन नहीं है? कहीं नेटवर्क की समस्या है और कुछ शिक्षक भी इनके उपयोग के प्रति पूर्ण जानकारी नहीं ले पाए है? कुछ विद्यार्थियों के पास पढ़ने के समय घर के अन्य कामों में व्यस्तता अधिक होती है जिसके कारण वो अपने आप को इस शिक्षा से आज भी नहीं जोड़ पाए है।

वर्तमान में हमें अपनी सोच को विकसित करने की आवश्यकता है। खुद को समय के साथ चलाने की आवश्यकता है। हमें अपने

अन्दर एक नयापन लाना होगा। तभी आने वाले समय में होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षा में क्रांति लानी ही होगी तभी हम अपने आप को इस वर्तमान युग में चलने वाली प्रणाली से जोड़ पाऐंगे। ऐसी शिक्षा प्रणाली को अपनाने के लिए शिक्षण प्रशिक्षण का होना जरूरी है और इसके साथ-साथ किसी भी तकनीकी को अपनाने से पहले हमें उसके नुकसान और फायदे का पता होना बहुत जरूरी है। शिक्षक के साथ विद्यार्थियों के माता-पिता में इस शिक्षा प्रणाली के प्रति जागरूकता होना जरूरी है तभी ऐसी शिक्षा के प्रति सार्थकता पूर्ण हो पाएगी।

शिक्षा में नित नए-नए प्रयोग होने की वजह से पाठ्यपुस्तक का ज्ञान ही विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त नहीं हो रहा था। अपने ज्ञान में विस्तार के लिए ओर अपने ज्ञान में कुछ नयापन लाने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस की गई। जिसके परिणामस्वरूप आज संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की महत्ता बहुत अधिक बढ़ गई है।

शोध उद्देश्य -

1. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अंतर ज्ञात करना।
2. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अंतर ज्ञात करना।
3. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में अंतर ज्ञात करना।

शोध परिकल्पना

1. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान प्रारूप

अध्ययन में सर्वेक्षण विधि द्वारा दत्त संकलन किया गया।

दत्त एवं जनसंख्या

राजस्थान के जयपुर जिले के शहरी व ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में से यादृच्छिक विधि द्वारा 200 ग्रामीण व 200 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें प्रत्येक समूह में 100 छात्र व 100 छात्राऐं चयनित की गई।

परिकल्पना 1

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्य मान (M)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio)	0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	200	22.50	16.91	2.84	अस्वीकृत	अस्वीकृत
शहरी विद्यार्थी	200	18.95	4.97	—	—	—
निष्कर्ष	***400***	—	—	***2.84***	**सार्थक अंतर है।**	**सार्थक अंतर है।**

df = N1+N2-2, 200+200-2 = 398

पी वेल्यू 0.0046

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 22.5 तथा 18.95 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 16.91 तथा 4.97 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 2.84 प्राप्त हुआ। डीएफ 398 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.33 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होने का कारण है कि शहरी विद्यार्थियों के पास सोशल मीडिया के माध्यम अधिक आसानी से उपलब्ध हो जाते है जिससे वह उनसे अधिक प्रभावित होते है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना 2

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

समूह (Group)	संख्या (छ)	मध्य मान (ड)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio)	0.05 स्तर	0.01 स्तर
ग्रामीण छात्र	100	20.6	4.13	1.59	स्वीकृत	स्वीकृत

ग्रामीण छात्रा	100	24.4	23.47	—	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।

df = N1+N2-2, 100+100-2 = 198, पी वेल्यू 0-112

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 20.6 तथा 24.4 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 4.13 तथा 23.47 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.59 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका कारण है कि ग्रामीण छात्र और छात्रा दोनों के पास समान परिस्थितियों में सोशल मीडिया से जुड़ने के सीमित साधन प्राप्त होते है जिससे दोनों इससे समान रूप से प्रभावित होते है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 3

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

समूह (Group)	संख्या (छ)	मध्य मान (ड)	मानक विचलन (S.D)	क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio)	0.05 स्तर	0.01 स्तर
शहरी छात्र	100	17.94	4.94	3.04	अस्वीकृत	अस्वीकृत
शहरी छात्रा	100	19.96	4.44	—	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर है।

df = N1+N2-2, 100+100-2 = 198

पी वेल्यू 0-0027

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र व छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव संबंधी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 17.94 तथा 19.96 प्राप्त हुआ है। इन दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 4.94 तथा 4.44 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 3.04 प्राप्त हुआ। डीएफ 198 स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.65 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.34 है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इसका कारण है कि सोशल मीडिया का अधिकांश उपयोग शहरी छात्राऐं अधिक करती है वह सोशल मीडिया साइट्स पर अधिक सक्रिय रहती है अतः शहरी छात्राओं में सोशल मीडिया का प्रभाव छात्रों की तुलना में अधिक पडता है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण व शहरी अकादमिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

सोशल मीडिया की प्रभावशीलता का ग्रामीण अकादमिक महाविद्यालयों के छात्र तथा छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ सूची

1. शिक्षक अन्तर्दृष्टि. द्विमासिक शोध पत्रिका: ए रिफर्ड जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च.
2. नई शिक्षा. 'पद्म श्री' एन.एस. भाटी पथ, बनीपार्क, जयपुर.
3. सर्जन. शोध विशेषांक. शोध एवं प्रकाशन विभाग, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर.
4. अन्वेषिका. अध्यापक शिक्षा पत्रिका.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution **(CC BY 4.0)** license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.